Research Activities of SAIL

2402. SHRI ASHOK NATH VERMA: Will the Minister of STEEL be pleased to state:

(a) whether Ancillary Development and Material Planning and R. D. Divisions of Steel Authority of India Limited, individually or in collaboration with other research institutions have developed technology for various captive consumption products or for import substitution for development/growth of ancillary/small scale units;

(b) whether it is also a fact that Steel Authority of India has transferred technical know-how to interested parties for commercial purpose, if so, what norms and criteria were adopted in this regard;

(c) what are the names of the products with annual requirement and amount involved for which technology is proposed to be transferred; and

(d) what assistance Steel Authority of India is giving to such ancillary units by way of incentives etc. to make ancillary programme a success?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STEEL (SHRI SONTOSH MOHAN DEV): (a) Yes, Sir. The R&D effort of SAIL's Research and Development Centre for Iron and Steel (RDCIS) is directed basically towards key problem areas of SAIL's Steel Plants like improvement in quality and productivity, conservation of energy, etc. However, it has also developed and supplied technical know-how and design and manufacturing drawings based on which products for Steel Plants could be manufactured in collaboration with outside industries including Small Scale Units. Some of those products are import substitution items also.

(b) Yes, Sir. Norms and criteria are tailored to suit the requirement of both SAIL and the ancillary/small scale units involved.

(c) RDCIS has plans to transfer techinal know-how etc. for manufacturing high temperature spring for slide gate machine. Its annual requirement is ten thousand numbers of springs made of super alloy amounting to Rs. One Crore.

(d) Assistance and incentives being extended by RDCIS to ancillary/small scale units are in the form of supply of know-how and placement of orders for manufacture and supply of the products.

स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड को कोयले का प्रयोग करने की सलाह

2403. **श्री राम जैठमलानी** : क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि औद्योगिक लागत और मूल्य ब्यूरो ने स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड को उत्कृष्ट उत्पादन के लिए कम राख युक्त कोयले का उपयोग करने की सलाह दी है ;

(ख) यदि हां, तो इस कोयले में राख की कितनी मात्रा को उपयुक्त बताया गया है ;

(ग) क्या इस्पात विभाग ने कोल इंडिया से इस्पात कारखानों को ऐसा कोयला उपलब्ध कराने का आग्रह किया है ;

(घ) क्या इस प्रकार के कोयले की वार्षिक मांग का भी अनुमान लगाया गया है ; और

(ङ) यदि हां, तो वह मात्रा कितनी है और कोल इंडिया की इस पर क्या प्रतिक्रिया है ?

इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री संतोष मोहन देव) : (क) और (ख) जी, हां । औद्योगिक लागत तथा मूल्य ब्यूरो ने अक्टूबर, 1990 की अपनी रिपोर्ट में "सेल" के इस्पात संयंत्रों में समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय इस्पात उत्पाद की गुणवत्ता के स्तर की प्राप्ति के लिए

कोयला-मिश्र में 50 प्रतिशत आयातित कोयले के इस्तेमाल का सुझाव दिया है। 'सेल' के इस्पात संयंत्रों में 10 से 30 प्रतिशत आयातित कोयले के इस्तेमाल को ध्यान में रखते हुए औद्योगिक लागत तथा मूल्य ब्यूरो ने सिफारिश की है कि संयंत्रों के आधुनिकीकरण के पश्चात् कोयला-मिश्र में आयातित कोयले का इस्तेमाल 30 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाए। औद्योगिक लागत तथा मूल्य ब्यूरो की रिपोर्ट में 'सेल' के विभिन्न इस्पात संयंत्रों के लिए कोक राख की मात्रा 22 प्रतिशत से 25 प्रतिशत के बीच होने की परिकल्पना की गयी है।

(ग) सरकार यह बराबर प्रयास करती रही है कि यह सुनिश्चित किया जाए कि कोल इंडिया लिमिटेड से लगभग 17 प्रतिशत राख-युक्त शोधित कोककर कोयले की सप्लाई हो। यह स्तर प्राप्त किया जा सकता है और इसके लिए कोल इंडिया लिमिटेड योजना बना रही है। राख की मात्रा 7 प्रतिशत से 9 प्रतिशत तक घटाना जैसा कि आयातित कोयले में होती है, कोल इंडिया लिमिटेड के लिए संभव नहीं है।

(घ) और (ङ) "सेल" के संयंत्रों में कोककर कोयले की आवश्यकता वर्ष 1991-92 में 142 लाख टन तथा वर्ष 1996-97 में लगभग 190 लाख टन होने का अनुमान लगाया गया है। "सेल' के संयंत्रों को कोककर कोयले का आयात जारी रखना पड़ सकता है क्योंकि स्वदेशी उपलब्धता मांग से कम होने का अनुमान है।

Bye-products of SAIL and Rashtriya Ispat Ltd.

2404. SHRI ASHOK NATH VERMA: Will the Minister of STEEL be pleased to state:

(a) what are the details of Bye-products being produced by Steel Authority of India Ltd. and its subsidiaries and Rashtriya Ispat Ltd. with annual production capacity, product-wise;

(b) what are the norms laid down for marketing/distribution of such bye-products *viz.* directly, through wholesale outlets distributors and through other agencies, product-wise?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STEEL (SHRI SONTOSH MOHAN DEV): (a) The bye-products produced by Steel Authority of India Limited (SAIL) including its subsidiaries and Visakhapatnam Steel Project (VSP) of Rashtriya Ispat Nigam Limited, together with the annual production capacities are indicated below:

By-product	Annual capacity (in lakh tonnes)	
	SAIL including Subsidiaries	VSP
I. *Coal Chemical*		
(a) Crude Benzol products	1·25	..
(b) Crude Tar products	5·00	0·58
(c) Ammonium Sulphate	1·80	0·21